पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरण — मॉड्यूल एक — यहोशू की पुस्तक का परिचय

विचार-विमर्श के प्रश्न

1. आपको इस अध्याय में क्या सबसे अच्छा लगा, या आपके विचार से आपने क्या सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी? आपके मन में क्या प्रश्न थे?
2. यहोशू के लेखक ने यह पुस्तक क्यों लिखी? उसने “उनके संसार” के अपने मूल पाठकों से उस बात से क्या सीखने की अपेक्षा की जो यहोशू के दिनों के “उस संसार" में हुआ था?
3. क्या यह बात कि यहोशू की पुस्तक एक से अधिक लेखकों द्वारा लिखी गई है और उसमें अन्य स्रोतों को उद्धृत किया गया है, आपके लिए इसकी ईश्वरीय प्रेरणा पर संदेह करने का कारण बनती है? क्यों और क्यों नहीं?
4. यहोशू की पुस्तक बताती है कि यहोशू और इस्राएल की सेना परमेश्‍वर और शैतान के बीच के प्राचीन संघर्ष में भाग ले रही थी। यह जानकारी कनान पर यहोशू की विजय के बारे में आपके दृष्टिकोण को कैसे बदलती है? यह आपकी कलीसिया और आपके जीवन में वर्तमान संघर्षों की आपकी समझ को कैसे प्रभावित करती है?
5. जब यीशु अपने राज्य की अंतिम पूर्णता पर लौटेगा तो वह यहोशू की जयवंत विजय, गोत्र-संबंधी उत्तराधिकार और वाचा के प्रति विश्वासयोग्यता की आशाओं को कैसे पूरा करेगा?
6. आप ऐसे किसी व्यक्ति को क्या प्रत्युत्तर देंगे जो यह मानता है कि मसीहियों को परमेश्‍वर के शत्रुओं पर शारीरिक हमला करना चाहिए, जैसे यहोशू और इस्राएलियों ने किया था?
7. इस्राएल द्वारा कनान पर अधिकार करना पृथ्वी पर मनुष्यजाति द्वारा अधिकार कर लेने की परमेश्वर की आदिकालीन बुलाहट पर आधारित था। आज मसीही किन व्यावहारिक तरीकों से पृथ्वी को भरने और उस पर अधिकार करने के परमेश्‍वर के आदेश में भाग ले सकते हैं?
8. इस बारे में सोचें कि आप यहोशू की पुस्तक से कैसे सिखा या प्रचार कर सकते हैं। आप इसे कैसे देखेंगे? आप किन बातों पर बल देंगे? आप किन विषयों से निपटेंगे?
9. हालाँकि यीशु का बलिदानपूर्ण प्रायश्चित हमें दंड से बचाता है, फिर भी हमसे परमेश्‍वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने की अपेक्षा की जाती है। आप यहोशू की पुस्तक का प्रयोग परमेश्‍वर के प्रति विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता को प्रोत्साहित करने के लिए कैसे करेंगे?
10. यहोशू की पुस्तक आपको यीशु को बेहतर तरीके से जानने में कैसे सहायता करती है? क्या उसकी सेवकाई या उसके राज्य के कोई ऐसे पहलू हैं जिनकी आप इस अध्याय का अध्ययन करने के बाद अब अधिक सराहना करते हैं? अपने उत्तर को स्पष्ट करें।
11. मसीह के राज्य की पूर्णता पर, अविश्वासियों के प्रति परमेश्वर की दया समाप्त हो जाएगी, और उनका पूर्ण विनाश होगा। अविश्वासियों की भावी नियति से हमें आज अपना जीवन कैसे जीने के लिए प्रेरित होना चाहिए?

**समीक्षा कथन :** यहोशू की पुस्तक के मूल पाठक जानते थे कि उन्हें कभी यहोशू द्वारा सभी कनानियों को मार डालने वाले कार्य को नहीं दोहराना होगा। बल्कि उन्हें उन बातों को अपने समय में लागू करना था जो कनान पर विजय पाने के समय हुआ था, जब उन्होंने इस्राएल के राजा की भविष्य की वैश्विक विजय की ओर इतिहास को आगे बढ़ाना जारी रखा।

**विषय का अध्ययन 1 :** कारमेन एक मसीही थी जो अविश्वासियों से उस राजा के बारे में बात करना पसंद करती थी जिसने बुराई और मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी। उसने कहा, “यीशु जगत का राजा है। उसने शैतान और मृत्यु पर विजय प्राप्त की है। कुछ समय के लिए, वह अपने शत्रुओं को — जो उस पर विश्वास नहीं करते — अपनी आत्मसमर्पण की शर्तों को स्वीकार करने का अवसर दे रहा है। यदि आप समर्पण करेंगे, तो वह आपको क्षमा करेगा, आपको अपनी संतान बनाएगा और आपको नई पृथ्वी पर एक अद्भुत उत्तराधिकार देगा जहाँ आप हमेशा के लिए रहेंगे। लेकिन वह समय आ रहा है जब यह प्रस्ताव समाप्त हो जाएगा। जब वह दिन आएगा, तो राजा उन सभी को दंड देगा जिन्होंने उसके आत्मसमर्पण की शर्तों को स्वीकार नहीं किया है।”

**विषय का अध्ययन 2 :** कार्लोस एक मसीही था जिसमें अविश्वासियों के प्रति कोई धैर्य नहीं था। यदि वे तुरंत मन नहीं फिराते, तो वह उन पर अपना समय लगाना व्यर्थ समझता था।

मनन के प्रश्न :

1. क्या आपने कभी सोचा है कि राजा मसीह, जिसने बुराई पर विजय प्राप्त की है, अपने शत्रुओं के समक्ष समर्पण की शर्तें रखता है? आप उसके समर्पण की शर्तों की तुलना अतीत के शासकों, राष्ट्रों या राजाओं की शर्तों से कैसे करेंगे? अपने सीखने वाले समुदाय के साथ इस पर चर्चा करें :
2. अविश्वासियों के प्रति कारमेन के दृष्टिकोण की तुलना कार्लोस के दृष्टिकोण से कीजिए। आप अपनी संस्कृति में मसीहियों को जो करते हुए देखते हैं, उसमें से कौन सा दृष्टिकोण अधिक निकट है? आपने जो किया है, उसमें से कौन सा दृष्टिकोण अधिक निकट है? उदाहरण दीजिए।
3. आप किस सीमा तक यीशु के समर्पण की शर्तों के प्रति आश्चर्य में रहते हैं?

दिए जानेवाले कार्य :

1. एक अविश्वासी के साथ सुसमाचार बाँटें, इस विचार का प्रयोग करते हुए कि मसीह राजा ने युद्ध जीत लिया है, लेकिन उसने दंड को तब तक के लिए स्थगित कर दिया है जब तक कि वह लोगों को समर्पण की अपनी शर्तों को मानने का अवसर नहीं देता। बाद में लिख लीजिए कि आपने क्या कहा और उस व्यक्ति ने कैसे प्रत्युत्तर दिया।
2. इस सप्ताह प्रतिदिन प्रार्थना करें कि प्रभु आपको समर्पण की उसकी अद्भुत शर्तों की अधिक गहराई से सराहना करने में मदद करे।